इस प्रकार होता है दैवीय गुणों का विकास

दैवीय गुणों का विकास करने के लिए आध्यात्मिक जीवन के अभ्यासी बनें क्योंकि इस जीवनशैली में स्वाभाविक रूप से जीवन की सिद्धि सफलताएं समाधान और कल्याण के सूत्र मौजूद हैं। इसमें क्षमाशीलताएं विनय और परमार्थ जैसे अनेक सद्गुणों का स्थायी वास रहता है। जन्म जरा और मृत्यु भौतिक शरीर को सताते हैं आध्यात्मिक शरीर को नहीं। आध्यात्मिक व्यक्ति ईश्वरीय शक्ति संपन्न बन जाता है। अध्यात्म जीवन का ऐसा सत्य है एक ऐसी अनिवार्यता है जो देर.सबेर जीवन का सचेतन हिस्सा बनती है और लौकिक अस्तित्व को पूर्णता देती है। इस तरह यह विश्लेषण विवेचन व चर्चा से अधिक जीने का अंदाज है जिसे जी कर ही जाना व पाया जा सकता है। प्राण वायु की तरह हर पल अध्यात्म तत्व को जीवन में धारण कर हम अपने जीवन की खोई हुई जीवंतता और लय को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार हमारे व्यक्तित्व में दैवीय गुणों का विकास होता है और एक विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता

दैवीय गुणों का विकास करने के लिए आध्यात्मिक जीवन के अभ्यासी बनें क्योंकि इस जीवनशैली में स्वाभाविक रूप से जीवन की सिद्धि सफलताएं समाधान और कल्याण के सूत्र मौजूद हैं। इसमें क्षमाशीलताएं विनय और परमार्थ जैसे अनेक सद्गुणों का स्थायी वास रहता है।

जन्म लेती है।

जीवन में भक्ति और दिव्य कर्मों के विषय में सब कुछ जानने का प्रयत्न ही अध्यात्म है। जिस समय हम शांतिए अकारण सुख व आनंद की अवस्था में होते हैंए हम अपने वास्तविक स्व मेंए गहन अंतरात्मा में जी रहे होते हैं। सही मायने में अध्यात्म एक दर्शन है चिंतन धारा है विद्या हैए हमारी संस्कृति की परंपरागत विरासत है। यह आत्मा परमात्मा जीव माया जन्म मृत्युए पुनर्जन्म सृजन प्रलय की अबूझ पहेलियों को सुलझाने का प्रयत्न है। देखा जाए तो स्वयं को स्वयं से जोड़ने का नाम आध्यात्मिकता है।

इस संसार में मानव जीवन से अधिक श्रेष्ठ अन्य कोई उपलब्धि नहीं है। एकमात्र मानव जीवन ही वह अवसर है जिसमें मनुष्य जो भी चाहे प्राप्त कर सकता है। इसका सदुपयोग मनुष्य को कल्पवृक्ष की भांति फलीभूत होता है। जो मनुष्य इस सुरदुर्लभ मानव जीवन को पाकर उसे सुचारु रूप से संचालित करने की कला नहीं जानता यह उसका दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।

मानव जीवन वह पवित्र क्षेत्र है जिसमें परमात्मा ने सारी विभूतियां बीज रूप में रख दी हैं जिनका विकास नर को नारायण बना देता है। किंतु इन विभूतियों का विकास तभी होता है जब जीवन का व्यवस्थित रूप से संचालन किया जाए। अध्यात्म हमें जीवन के द्वंद्वों के बीच सम रहने और विषमताओं को पार करने की शक्ति देता है। आध्यात्मिक दृष्टि में जीवन का लक्ष्य आत्म.जागरण आत्म.साक्षात्कार ईश्वर प्राप्ति है। यह प्रक्रिया स्वयं को जानने के साथ प्रारंभ होती हैए अपनी अंतरात्मा से संपर्क साधने और उस सर्वव्यापी सत्ता के साथ जुड़ने के साथ आगे बढ़ती है।

अध्यात्म विवेक को जागृत करता है जो सहज स्फूर्त नैतिकता को संभव बनाता है और हम जीवन मूल्यों के स्रोत से जुड़ते चले जाते हैं। अध्यात्म अंतर्निहित दिव्य क्षमताओं एवं शक्तियों के जागरण विकास के साथ व्यक्तित्व की चरम संभावनाओं को साकार करता है। आज हम जिन महामानवों अथवा देव मानवों को आदर्श के रूप में देखते हैं वे किसी न किसी रूप में इसी विकास का परिणाम होते हैं।

इस मंदिर में नहीं जा सकते पुरुष

सनातन धर्म में तीर्थ.स्थानों में पूजा.पाठ को लेकर कई तरह के नियम और परंपराएं हैं जिनका पालन सदियों से हो रहा है। इसी के तहत देश के कुछ मंदिरों में जहां महिलाओं का प्रवेश वर्जित है वहीं केरल में एक ऐसा मंदिर है जिसमें पुरुषों को प्रवेश की अनुमति नहीं है। अगर इस मंदिर में दर्शन करना ही है तो प्रवेश करने के लिए पुरुषों को भी महिलाओं की तरह ही 16 श्रृंगार कर जाना होता है।

केरल के कोल्लम जिले में स्थित यह मंदिर श्री कोत्तानकुलांगरा देवी का है। इस मंदिर के नियम के अनुसार यहां सिर्फ महिलाएं और किन्नर ही प्रवेश पा सकते हैं। वहीं पुरुषों को प्रवेश के लिए स्त्री का वेश धारण करना पड़ता है।

इस मंदिर में न सिर्फ महिलाएं और किन्नर बड़ी संख्या में देवी पूजन के लिए आते हैं बल्कि पुरुष भी नियम के अनुसार महिलाओं के कपड़े पहन कर देवी की पूजा करते हैं।

श्री कोत्तानकुलांगरा देवी मंदिर में हर साल चाम्याविलक्कू का पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है। जिसमें शामिल होने के लिए दूर.दराज से बड़ी संख्या में पुरुष श्रद्धालु आते हैं। जिन्हें मंदिर में प्रवेश के लिए न सिर्फकिन्नरों के कपड़े पहनने पड़ते हैं बल्कि उनकी तरह 16 श्रृंगार करते हुए गहने गजरा आदि भी लगाना पड़ता है।

चाम्याविलक्कू त्योहार में शामिल होने वाले पुरुष श्रद्धालुओं को सजने.संवरने के लिए एक अलग से मेकअप रूम बनाया जाता है। जहां पर वे महिलाओं की तरह 16 श्रृंगार करते हैं। इस मंदिर में प्रवेश के लिए भले ही कपड़ों आदि को लेकर नियम और शर्तें हों लेकिन उम्र का कोई बंधन नहीं है। यहां हर उम्र का पुरुष महिलाओं की तरह श्रृंगार करके प्रवेश पा सकता है।

श्री कोत्तानकुलांगरा देवी के मंदिर की खास बात यह भी है कि इसके गर्भगृह के ऊपर छत और कलश नहीं है। मान्यता यह भी है कि यहां देवी स्वयं प्रकट हुई थीं। देवी के पूजन के लिए यहां पर बड़ी संख्या में किन्नर आते हैं। मान्यता है कि श्री कोत्तानकुलांगरा देवी की शिला को जब पहली बार कुछ चरवाहों ने देखा तो उन्होंने वस्त्र फूल आदि अर्पित करके देवी का पूजा किया। जिसके बाद देवी की इस शिला से दिव्य शक्ति निकलने लगी। इसके पश्चात् इस मंदिर का निर्माण हुआ हालांकि इस मंदिर के बारे में यह भी कथा मिलती है कि जब कुछ लोगों द्वारा यहां इस शिला पर नारियल फोड़ा गया तो इस शिला से खून निकलने लगा था। उस चमत्कार को देखने के बाद लोगों ने इस शक्तिपीठ पर पूजन प्रारंभ कर दिया।

एकाग्रता से मिलता है लक्ष्य

हमें शुरुआत से ही बार.बार ध्यान लगाकर काम करने की सीख दी जाती है पर वर्तमान में इस पर गौर किया जाए तो ध्यान की कमी नजर आती है। एकाग्रता के संबंध में धनुर्धर अर्जुन से सीख लें। अर्जुन को अपने लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था।

जब मन एक कार्य पर एकाग्र होता है उस समय ध्यान की तीव्रता अत्यधिक बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप आप कार्यों को भली.भांति संपन्न करते हैं। आज के समय में जब प्रतियोगिता इतनी अधिक बढ़ गई है तो गहन कार्य या पूर्ण एकाग्रता के साथ काम करना न सिर्फ समय का सदुपयोग है बल्कि समय नियोजन भी है। अस्त.व्यस्त दिनचर्या की अगर कोई काट है तो वह मानसिक एकाग्रता के साथ संपन्न किया गया कर्म ही है। अगर आप इसे जीवन का धर्म बना लें तो इसके बाद आपकी क्षमता पूर्ण रूप से विकसित हो पाती है।

उपनिषदों में दो शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. कर्म और धर्म। धर्म का अर्थ है हमारा स्वभाव और कर्म जो हम करते हैं। कर्म में हमारी दृष्टि बाहर की ओर होती है और धर्म हमें अपने अंदर की ओर मोड़ देता है अपने अंतर्मन की ओर। मन को लेकर हमें ज्ञात है कि इसे नियंत्रण में करना अति कठिन है क्योंकि मन में भांति.भांति के उद्वेग उठते रहते हैं। इसे मन का विकार कहते हैं और जब यह मन विचलन से रहित हो जाता है उस शांत निर्विकार दशा को आत्मा कहते हैं।

एकाग्रता वह बिंदु है जहां पर धर्म और कर्म आपस में मिल जाते हैं और व्यक्ति स्वयं को लक्ष्य के प्रति समर्पित कर देता है। इसके बाद आप को अर्जुन की तरह चिड़िया की आंख के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता है। फिर कोई भी मंजिल दूर नहीं रहती है।

भगवान की ऐसी प्रतिमाएं न रखें

हिंदू धर्म के ज्यादातर घरों में भगवान का मंदिर या फिर मूर्तियां होती हैंए जिनके हर रोज दर्शन और पूजा करते हैं। हम पूजा इस आस्था से करते हैं कि इनका शुभ प्रभाव घर पर पड़ेए क्योंकि भगवान के दर्शन मात्र से ही मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है पर वास्तु के अनुसारए कई मूर्तियां ऐसी भी होती हैं कि जिनके दर्शन करने से मनुष्य पर अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। आज हम आपको कुछ ऐसी मूर्तियों के बारे में बताने जा रहे हैंए जिनके दर्शन करना वास्तु के अनुसार गलत बताया गया है3

होता है नकारात्मक ऊर्जा का संचार

वास्तु के अनुसारए भगवान की ऐसी किसी तस्वीर या मूर्ति के दर्शन करने से बचना चाहिए। जिसमें वह किसी से युद्ध करते या फिर विनाश करते नजर आ रहे हों। ऐसी मूर्तियां घर में भी नहीं रखनी चाहिए क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

दर्शन करना होता है अशुभ

घर में कभी भी ऐसी मूर्ति या तस्वीर न रखेंए जो टूटी हुई या फिर खंडित हो। उनके दर्शन करना अशुभ माना गया है। ऐसी मूर्ति के दर्शन करना दुख का कारण बन सकता है। इस तरह की मूर्तियों को नदी में सर्वा कर देना चाहिए या फिर पीपल के पेड़ के नीचे रख देनी चाहिए।

नहीं लाएं ऐसी मूर्ति

घर में हमेशा भगवान की खड़ी प्रतिमा के बजाय आसन पर विराजमान मूर्तियों को लाना चाहिए। ऐसी प्रतिमा या तस्वीर अधिक शुभ व लाभ प्रदान करती है। साथ ही उनका मुंह सौम्य और हाथ आशीर्वाद देते हुए हों। वास्तु के अनुसार कभी भी घर में रौद्र मूर्ति नहीं लानी चाहिए।

दरिद्रता का होता है वास

भगवान की मूर्ति या तस्वीर घर में इस तरह नहीं रखनी चाहिएए जहां उनका पीछे का भाग यानी पीठ दिखाई दे रही हो। भगवान की पीठ के दर्शन करने से पुण्य कर्म का प्रभाव कम होता है। माना जाता है कि भगवान की पीठ के दर्शन करने से दरिद्रता का वास होता है।

दुर्भाग्य को मिलता है निमंत्रण

घर के मंदिर में कभी भी एक ही भगवान की दो प्रतिमाएं या फिर तस्वीर नहीं रखनी चाहिए। ऐसा करने से दुर्भाग्य को निमंत्रण मिलता है। साथ ही आप जहां भी पूजा कर रहे हों वहां अग्नि से संबंधित जैसे. विघुत मोटर्स आदि चीजें नहीं रखनी चाहिए।

घर में फैलती है अशांति

वास्तु विज्ञान के अनुसारए घर में कभी भी भगवान शिव के अवतार भैरव देवए नटराजए शनि देव और राहु.केतु की मूर्ति या तस्वीर को घर में नहीं लाना चाहिए। इनके दर्शन मंदिर में ही करने चाहिए घर में इनकी पूजा नहीं करनी चाहिए। ऐसी मूर्ति लाने से घर में अशांति फैलती है।

घर के कोनों पर निर्माण से पड़ता है विपरीत प्रभाव

कई बार देखा जाता है कि नये घर में जाने के बाद व्यक्ति की परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके पीछे सही वास्तु के अनुसार घर का निर्माण नहीं होना भी जिम्मेदार हो सकता है। कई घरों में लोग किसी एक कोने में भी निर्माण करा लेते हैं। कोई कमरा या गैराज बनाकर उसका उपयोग करते हैं। वास्तु के अनुसार इस तरह के निर्माण का घर और उसमें रहनेवाले व्यक्तियों पर विपरीत प्रभाव पढ़ता है।

ईशान कोण पर ढक्कन का प्रभाव

प्लॉट की पूर्व और उत्तर दिशा के मिलने पर बने कोने को ईशान कोण कहते हैं। अगर इस कोण पर ढक्कन लगा दिया जाए तो इस घर में रहनेवाले लोगों का जीवन कष्टों से भर सकता है। उन्हें कई प्रकार की समस्याएं आ सकती हैं। वास्तु के अनुसार यह निर्माण खासतौर पर घर के बड़े पुत्र के लिए कष्टदायी हो सकता है।

आग्नेय कोण पर निर्माण

यदि कंपाउंड वॉल के आग्नेय कोण यानी पूर्व और दक्षिण दिशा के मिलने की जगह पर निर्माण करा दिया जाता है तो इससे परिवार में अनहोनी और अकाल मृत्यु की स्थितियां निर्मित हो सकती हैं।

वायव्य कोण में ढक्कन होना

प्लॉट की कंपाउंड वॉल के वायव्य कोण यानी उत्तर और पश्चिम दिशा के कोने पर यदि निर्माण कराया जाता है तो इस घर में रहने वाले लोगों को आर्थिक और पारिवारिक जीवन में बहुत ही अधिक दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। जब तक भाग्य घर के लोगों का साथ देता है तब तक इन प्रभावों का अहसास नहीं होता लेकिन जैसे ही ग्रह.स्थिति बदलती है तो परिवार की हालत बहुत खराब हो जाती है।

नैऋत्य कोण में निर्माण

कंपाउंड वॉल के नैऋत्य कोण दक्षिण और पश्चिम का कोना को कवर करने पर यदि कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो बुरे प्रभावों से बचा जा सकता है। जैसे केवल कंपाउंड वॉल पर ही कमरे का निर्माण करें। इस कमरे की छत या दीवार मुख्य भवन की छत या दीवार से न मिलती हो और इन दोनों के बीच कम से कम 4 फीट की दूरी जरूर हो। अगर इस नियम का ध्यान नहीं रखा जाता और छत आपस में मिल जाती है तो इसे नैऋत्य कोण का बढ़ाव माना जाता है जो कि घर के लिए अशुभ होता है।

नहीं बनना चाहिए ऐसा गड्ढा

यदि आप नैऋत्य कोण में कंपाउंड वॉल पर कमरा बना रहे हैं तो इसका फर्श घर के फर्श के बराबर या घर के फर्श से ऊंचा रख सकते हैं लेकिन इसका फर्श घर के फर्श से नीचा नहीं रखना चाहिए। इसका फर्श नीचा होने पर यह नैऋत्य कोण का गड्ढा बन जाता है जो घर के लिए हानिकारक होता है।

हम सभी अपने घरों को विभिन्न प्रकार की तस्वीरों एवं कलाकृतियों से सजाते हैं। वास्तु के मुताबिक पेंटिंग्स तथा तस्वीर की प्रकृति के अनुसार ही उनका नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव होता है। वास्तु के अनुसार हर तस्वीर की एक अलग एनर्जी होती है जो घर के लोगों को प्रभावित करती हैं। ऐसे में हमें बहुत ही सोच-समझकर कलाकृति या तस्वीरें लगानी चाहिए। इसके अलावा अन्य बहुत सारे शुभ-अशुभ लक्षण होते हैं जोकि हमें आगामी अच्छे अथवा बुरे दिन का संकेत देते हैं।

घर के आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में किसी सुंदर लड़की या मॉडल की तस्वीर लगानी चाहिए। इससे घर का वातावरण अच्छा रहता है और साथ ही घर में सुख-समृद्धि भी बढ़ती है।

घर के बेडरुम में राधाकृष्ण की तस्वीर लगानी चाहिए। यह तस्वीर कमरे के उत्तर-पश्चिम कोने में होनी चाहिए। इससे विवाहित जिंदगी में प्रेम बढ़ता है।

उत्तर दिशा में कुबेर, लक्ष्मी या सूर्य की फोटो लगानी चाहिए। ज्योतिष के अनुसार इससे घर में धन आने का रास्ता खुलता है और घर में अखंड लक्ष्मी का वास होता है।

घर के नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम कोने) में प्रकृति संबंधी सुंदर चित्र जैसे पहाड़, सूर्य, सुंदर पेड़, बाग-बगीचे आदि की तस्वीर लगानी चाहिए। इससे घर का वास्तु ठीक रहता है। परन्तु इस बात का ध्यान रखें कि इन तस्वीरों में नदी, झरना आदि बहते पानी के चित्र न हों।

घर में महंगे गहने, स्टोन्स आदि की तस्वीर लगाना भी बहुत ही शुभ माना गया है। इससे घर में आर्थिक समृद्धि आती है।

घर के वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम कोने) में उड़ते हुए पक्षियों की तस्वीर लगानी चाहिए। इससे उस घर में रहने वाले लोगों की इच्छाएं पूरी होती हैं।

घर में सुंदर लड़कियों की तस्वीर लगाने से आता है पैसा